विचार बिन्दु

कितने देव, कितने धर्म, कितने पंथ चल पड़े, पर इस शोकग्रस्त संसार को केवल दयावानों की आवश्यकता है। –विलकास्य

माननीयों का कमीशन तंत्र!

भ्रष्टाचार लोकतंत्र को भीतर से खोखला करने वाली ऐसी बीमारी है, जिसमें जनसेवा का उद्देश्य निजी लाभ में बदल जाता है। जब सरकारी कर्मचारी रिश्वत माँगता है, तब कानून कार्रवाई कर सकता है; लेकिन जब जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों पर ही विकास कार्यों की अनुशंसा के बदले कमीशन माँगने के आरोप लगें, तब सवाल केवल भ्रष्टाचार का नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक नैतिकता का भी है। जनता विधायक इसलिए चुनती है कि वह क्षेत्र का विकास कराए, न कि जनता के धन से होने वाले कार्यों में अपना हिस्सा तलाशे।

राजस्थान के एक समाचार पत्र ने दिसंबर 2025 में राजस्थान में विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास निधि के कथित दुरुपयोग पर एक स्टिंग ऑपरेशन प्रकाशित किया। इसमें भाजपा विधायक रेवंतराम डांगा, कांग्रेस विधायक अनीता जाटव और निर्दलीय विधायक ऋतु बनावत से संबंधित कथित कमीशन सौदों का खुलासा किया गया। समाचार के अनुसार, पत्रकार ने एक काल्पनिक फर्म के प्रतिनिधि के रूप में संपर्क किया और विद्यालयों में दरी-फर्श की आपूर्ति के लिए विधायक निधि से अनुशंसा माँगी। रिपोर्ट में दावा किया गया कि तीनों मामलों में कमीशन को लेकर बातचीत हुई। डांगा के मामले में 50 लाख रुपये के कार्य की अनुशंसा और अग्रिम रकम लेने, अनीता जाटव के मामले में 50 हजार रुपये लेने तथा 80 लाख रुपये की अनुशंसा देने और ऋतु बनावत के पति के साथ 40 लाख रुपये की कथित डील का उल्लेख किया गया।

इन दावों की अंतिम सत्यता जाँच और न्यायिक प्रक्रिया से ही निर्धारित होगी। फिर भी, यदि विकास कार्यों की अनुशंसा के बदले कमीशन माँगने की प्रवृत्ति प्रमाणित होती है, तो यह सार्वजनिक धन की पवित्रता और जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही पर गंभीर प्रश्न खड़ा करती है।

पाँच करोड़ की निधि, कमीशन का कितना खतरा?

राजस्थान में प्रत्येक विधायक के लिए प्रतिवर्ष पाँच करोड़ रुपये की विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास निधि का प्रावधान है। इसका उद्देश्य सड़क, नाली, पेयजल, विद्यालयों की सुविधाओं और अन्य सार्वजनिक आवश्यकताओं के लिए धन उपलब्ध कराना है। यह राशि किसी विधायक की निजी संपत्ति नहीं, बल्कि जनता की अमानत है।

कल्पना कीजिए कि किसी विद्यालय को बैठने के लिए दरी की आवश्यकता है। यदि खरीद का निर्णय विद्यालय की वास्तविक जरूरत, गुणवत्ता और उचित कीमत के बजाय कथित कमीशन के आधार पर होने लगे, तो बच्चों की सुविधा पीछे छूट जाएगी। इसी प्रकार, यदि किसी निर्माण कार्य में 40 प्रतिशत कमीशन की माँग की जाती है, तो ठेकेदार के पास गुणवत्ता घटाने, लागत बढ़ाने या अनुचित लाभ निकालने का दबाव पैदा हो सकता है। यह एक संभावित स्थिति का उदाहरण है, किसी विशिष्ट कार्य में सिद्ध नुकसान का दावा नहीं। लेकिन इतना स्पष्ट है कि कमीशन की संस्कृति विकास की गुणवत्ता और सरकारी धन के उचित उपयोग के लिए खतरा है।

कार्रवाई हुई है, अब परिणाम भी चाहिए

इस प्रकरण को रफा-दफा कर दिए जाने की धारणा के विपरीत, उपलब्ध विवरण के अनुसार, सरकार और विधानसभा स्तर पर कार्रवाई की गई है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के आदेश पर आरोपी विधायकों के विधायक निधि खाते तुरंत फ्रीजकर दिए गए थे। इसके साथ ही विधायक कोष से अनुशंसा करने पर पाबंदी लगा दी गई थी।विधानसभा की सदाचार समिति ने संबंधित विधायकों को तलब कर उनका पक्ष सुना। राज्य सरकार ने उच्चस्तरीय प्रशासनिक जाँच भी गठित की, जबकि स्टिंग के आधार पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो में शिकायत किए जाने की जानकारी भी सामने आई।

इन कदमों का स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन जाँच समितियों का गठन और खातों को फ्रीज करना अंतिम न्याय नहीं है। जनता यह जानना चाहती है कि जाँच में क्या तथ्य सामने आए, क्या संबंधित अधिकारियों या बिचौलियों की भूमिका की पड़ताल हुई, क्या कथित लेन-देन के स्वतंत्र साक्ष्य मिले और क्या अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। यदि जाँच अभी जारी है, तो उसकी समयसीमा और वर्तमान स्थिति भी स्पष्ट होनी चाहिए। गोपनीयता के वैधानिक कारण हो सकते हैं, लेकिन उससे अनिश्चितकाल तक जवाबदेही टाली नहीं जानी चाहिए।

भ्रष्टाचार किसी एक राजनीतिक दल की समस्या नहीं है। सत्तारूढ़ दल, विपक्ष और निर्दलीय प्रतिनिधि-सभी के लिए समान नैतिक और कानूनी मानदंड होने चाहिए। विरोधी दल के नेता पर आरोप लगे तो कठोर कार्रवाई की माँग करना और अपने दल के नेता पर आरोप लगने पर चुप्पी साध लेना दोहरा मापदंड है। राजनीतिक दलों को अपने सदस्यों के विरुद्ध निष्पक्ष जाँच का समर्थन करना चाहिए।

मई 2025 में बागीदौरा के भारत आदिवासी पार्टी के विधायक जयकृष्ण पटेल को विधानसभा में खनन संबंधी प्रश्न वापस लेने के बदले कथित रिश्वत के मामले में ने गिरफ्तार किया था। एजेंसी के अनुसार, उन्हें 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया था। यह विधायक निधि वाले स्टिंग से अलग मामला है, लेकिन यह दर्शाता है कि जनप्रतिनिधियों के पद और अधिकारों के संभावित दुरुपयोग पर प्रभावी निगरानी कितनी आवश्यक है। गिरफ्तारी अपने आप में दोषसिद्धि नहीं है; इस मामले में भी अंतिम निर्णय कानून और न्यायिक प्रक्रिया के अनुसार ही होना चाहिए।

भ्रष्टाचार पर दलगत चुप्पी क्यों?

भ्रष्टाचार किसी एक राजनीतिक दल की समस्या नहीं है। सत्तारूढ़ दल, विपक्ष और निर्दलीय प्रतिनिधि-सभी के लिए समान नैतिक और कानूनी मानदंड होने चाहिए। विरोधी दल के नेता पर आरोप लगे तो कठोर कार्रवाई की माँग करना और अपने दल के नेता पर आरोप लगने पर चुप्पी साध लेना दोहरा मापदंड है। राजनीतिक दलों को अपने सदस्यों के विरुद्ध निष्पक्ष जाँच का समर्थन करना चाहिए। यदि आरोप सिद्ध हों, तो दलगत संरक्षण के बिना कार्रवाई हो; यदि सिद्ध न हों, तो संबंधित व्यक्ति को अनुचित बदनामी से बचाया जाए।

पारदर्शिता ही स्थायी समाधान

सबसे पहले, विधायक निधि से स्वीकृत प्रत्येक कार्य का विवरण सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध होना चाहिए। इसमें कार्य का नाम, स्थान, अनुमानित लागत, अनुशंसाकर्ता, स्वीकृति की तारीख, ठेकेदार, भुगतान, भौतिक प्रगति और पूर्णता प्रमाणपत्र शामिल हों। इससे नागरिक स्वयं देख सकेंगे कि उनके क्षेत्र के लिए आवंटित धन कहाँ और किस प्रकार खर्च हुआ।

दूसरे, निधि से होने वाले कार्यों का नियमित तकनीकी और वित्तीय ऑडिट किया जाए। बड़े कार्यों के साथ-साथ छोटे कार्यों का भी यादृच्छिक निरीक्षण हो। गुणवत्ता की जाँच स्वतंत्र तकनीकी एजेंसी से कराई जा सकती है और शिकायत मिलने पर समयबद्ध जाँच अनिवार्य की जानी चाहिए।

तीसरे, ठेकेदारों और आपूर्तिकर्ताओं के चयन में पारदर्शी प्रतिस्पर्धा, ई-टेंडरिंग जहाँ लागू हो, बाजार दरों की जाँच और हितों के टकराव से संबंधित स्पष्ट नियम होने चाहिए। अनुशंसा करने वाले जनप्रतिनिधि को कार्य की आवश्यकता और सार्वजनिक उपयोगिता का औचित्य भी दर्ज करना चाहिए।

चौथे, यदि जाँच में रिश्वत या कमीशन के पर्याप्त साक्ष्य मिलते हैं, तो संबंधित कानूनों के अनुसार मुकदमा, अभियोजन और अन्य उचित कार्रवाई की जाए। साथ ही, शिकायतकर्ता और गवाहों को संरक्षण मिले। दूसरी ओर, किसी को केवल मीडिया रिपोर्ट के आधार पर दोषी घोषित करना भी उचित नहीं होगा। जवाबदेही और निष्पक्ष प्रक्रिया दोनों लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं।

'माननीय' का सम्मान आचरण से

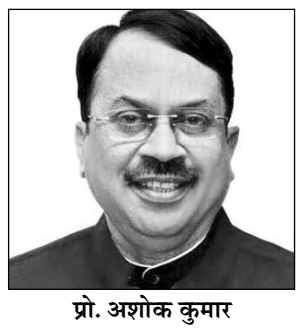
लोकतंत्र में जनप्रतिनिधि का सम्मान उसके पद से शुरू हो सकता है, लेकिन उसकी प्रतिष्ठा ईमानदारी, जनसेवा और संवैधानिक मर्यादा से ही कायम रहती है। विधायक निधि जनता की संपत्ति है, किसी जनप्रतिनिधि का कमीशन खाता नहीं। यदि इस प्रकरण में आरोप प्रमाणित होते हैं, तो कठोर कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए; यदि प्रमाणित नहीं होते, तो निष्पक्ष जाँच के आधार पर संबंधित व्यक्तियों को आरोपमुक्त किया जाना चाहिए।

लोकतंत्र की वास्तविक परीक्षा केवल चुनाव कराने में नहीं, बल्कि सार्वजनिक धन के प्रत्येक रुपये का सही उपयोग सुनिश्चित करने में है। जनता को आश्वासन नहीं, पारदर्शी व्यवस्था और परिणाम चाहिए। विकास की अनुशंसा जनसेवा का माध्यम होनी चाहिए, कमीशन कमाने का कारोबार नहीं।

–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डा.) पी. सी. कंठालिया,
पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

शिक्षा का स्वास्थ्य : जर्जर काया, वेंटिलेटर पर भविष्य

शिक्षा का स्वास्थ्य ठीक करना अब कोई नीतिगत विकल्प नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अस्तित्व और स्वाभिमान का अनिवार्य तकाजा है



प्रो. अशोक कुमार

मानव जीवन के संदर्भ में यह उक्ति सार्वभौमिक सत्य मानी जाती है कि 'पहला सुख निरोगी काया' अथवा 'स्वास्थ्य ही जीवन है'। यदि शरीर अस्वस्थ हो, तो संसार का कोई भी वैभव, उपाधि अथवा समृद्धि अर्थहीन हो जाती है। ठीक यही कसौटी किसी राष्ट्र और समाज की बौद्धिक चेतना यानी उसकी 'शिक्षा व्यवस्था' पर भी लागू होती है। शिक्षा केवल डिग्री बांटने का उपक्रम नहीं, बल्कि समाज की प्राणवायु और रीढ़ की हड्डी है। आज यदि हम ईमानदारी से आत्ममंथन करें, तो यह कड़वा सच स्वीकार करना होगा कि हमारी समूची शिक्षा प्रणाली स्वयं गंभीर रूप से अस्वस्थ है। प्राथमिक पाठशालाओं से लेकर विश्वविद्यालयों और यहां तक कि एम्स जैसे शीर्ष चिकित्सा संस्थानों तक, यह ढांचा बुनियादी सुविधाओं, शिक्षकों और संसाधनों के अभाव में हांफ रहा है। जब शिक्षा का अपना स्वास्थ्य ही वेंटिलेटर पर हो, तो वह राष्ट्र के स्वास्थ्य और भविष्य को कैसे संबल दे सकती है?

प्राथमिक एवं स्कूली स्तर: खोखली नींव पर टिकी व्यवस्था - किसी भी विशाल भवन का स्थायित्व उसकी नींव पर निर्भर करता है। प्राथमिक शिक्षा समाज की वही नींव है। किंतु ज़मीनी हकीकत यह है कि देश के अधिकांश ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में प्राथमिक विद्यालय स्वयं उपेक्षा के शिकार हैं।

कहीं बरसात में टपकती छतें और दरकती दीवारें हैं, तो कहीं बच्चों के बैठने के लिए बुनियादी टाट-पट्टी या फर्नीचर तक मयस्सर नहीं है। शौचालय, स्वच्छ पेयजल और खेल के मैदान जैसी मूलभूत आवश्यकताएं आज भी कई विद्यालयों के लिए विलासिता बनी हुई हैं। सबसे दुखद पहलू प्रयोगशालाओं और शिक्षकों का अभाव है। जब एक ही शिक्षक पांच कक्षाओं को एक साथ बैठाकर पढ़ाने को मजबूर हो, तो वहां विज्ञान के प्रयोग, जिज्ञासा और नवाचार की कल्पना कैसे की जा सकती है? जहां ब्लैकबोर्ड पर चाक चलाने वाले हाथ कम हों और कागज़ी आंकड़ों में 'शत-प्रतिशत नामांकन' के झूठे रिकॉर्ड चमकाए जा रहे हों, वहां शिक्षा का शरीर कुपोषण का शिकार नहीं होगा तो क्या होगा?

उच्च शिक्षा और विश्वविद्यालय: उपाधियों के कारखाने, शोध से दूरी- प्राथमिक स्तर की यह बीमारी धीरे-धीरे बढ़ते हुए उच्च शिक्षा के स्तर पर असाध्य रूप धारण कर लेती है। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थिति भी कम त्रासद नहीं है। नाम बड़े और दर्शन छोटे-यही आज के अधिकांश उच्च शिक्षण संस्थानों का यथार्थ बन चुका है। विश्वविद्यालयों में नए भवन और प्रशासनिक खंड तो खड़े हो जाते हैं, किंतु उनके भीतर ज्ञान का संचार करने वाले नियमित प्राध्यापकों के पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं।

दशकों से संविदा, एड-हॉक और अतिथि प्रवक्ताओं के सहारे कक्षाएं चलाई जा रही हैं। जिन शिक्षकों को स्वयं अपने कल के रोजगार की सुरक्षा नहीं है, वे विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण पूरी तन्मयता से कैसे कर पाएंगे? पुस्तकालयों में पुरानी पड़ चुकी किताबों के ढेर हैं, नवीनतम शोध पत्रिकाओं के सब्सक्रिप्शन के लिए बजट नहीं है, और विज्ञान संकायों की प्रयोगशालाओं में आधुनिक उपकरणों का नितांत अभाव है। परिणाम यह है कि हमारे उच्च शिक्षण संस्थान मौलिक शोध, आलोचनात्मक चिंतन और बौद्धिक विमर्श के केंद्र बनने के बजाय केवल कागज़ी डिग्रियां बांटने वाले कारखाने बनकर रह गए हैं।

शीर्ष चिकित्सा संस्थान भी अछूते नहीं: जब डॉक्टर बनाने वाली संस्थाएं ही अस्वस्थ हों - इस व्यवस्थागत रोग का सबसे चिंताजनक और चौंकाने वाला लक्षण हमारे शीर्ष मेडिकल संस्थानों में दिखाई दे रहा है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जैसी संस्थाएं, जिन्हें देश में उत्कृष्ट चिकित्सा शिक्षा और शोध का उच्चतम मानदंड माना जाता है, वे भी आज संकाय (फैकल्टी) और आधुनिक उपकरणों की गंभीर कमी से जूझ रही हैं।

विभिन्न राज्यों में नए एम्स और सरकारी मेडिकल कॉलेजों की घोषणाएं तो राजनीतिक वाहवाही के लिए तेज़ी से कर दी गईं, किंतु उनके संचालन के लिए आवश्यक सुपर-स्पेशलिस्ट फैकल्टी, आधुनिक डायग्नोस्टिक मशीनें और उन्नत प्रयोगशालाएं उपलब्ध नहीं कराई जा सकीं। कई मेडिकल कॉलेजों में बुनियादी एनाटॉमी, पैथोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री लैब्स आज भी आधुनिक मानकों से कोसों दूर हैं। जब भावी चिकित्सकों को प्रशिक्षित करने वाले संस्थानों में ही योग्य प्राध्यापक और अत्याधुनिक तकनीक नहीं होगी, तो कल के डॉक्टर किस प्रकार के नैदानिक कौशल के साथ समाज की सेवा करेंगे? यह स्थिति सीधे तौर पर देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने जैसी है।

रोग के मुख्य लक्षण और कारण

शिक्षा व्यवस्था के इस अस्वस्थ होने के पीछे कुछ प्रमुख कारण स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं:-भवन-केंद्रित विकास बनाम शिक्षक-केंद्रित दृष्टि: नीति-निर्माताओं का ध्यान अक्सर कंक्रीट के ढांचे खड़े करने, टेंडर जारी करने और फीते काटने पर अधिक रहता है, जबकि शिक्षा की वास्तविक आत्मा-योग्य शिक्षक, पुस्तकालय और शोध सुविधाएं-उपेक्षा का शिकार रह जाती हैं।

बजटीय आवंटन का असंतुलन: सकल घरेलू उत्पाद का जितना हिस्सा शिक्षा और शोध पर खर्च होना चाहिए, वह आज भी वैश्विक मानकों से काफी पीछे है। जो बजट मिलता भी है, उसका बड़ा हिस्सा प्रशासनिक खर्चों में खप जाता है।

अस्थायीकरण की प्रवृत्ति: नियमित भर्ती प्रक्रियाओं में वर्षों की देरी, लालफीताशाही और न्यायालयी विवादों के चलते पूरे तंत्र को अस्थायी और कम मानदेय वाले शिक्षकों के भरोसे छोड़ दिया गया है।

शिक्षा का स्वास्थ्य कैसे सुधरे: आवश्यक उपचार-यदि हमें शिक्षा के स्वास्थ्य को पुन: सुदृढ़ और प्राणवान बनाना है, तो सतही लीपापोती के बजाय बुनियादी सर्जरी की आवश्यकता है:

शिक्षक भर्ती को युद्धस्तर पर प्राथमिकता : प्राथमिक शालाओं से लेकर विश्वविद्यालयों और मेडिकल कॉलेजों तक सभी रिक्त पदों पर पारदर्शी, योग्यता-आधारित और समयबद्ध नियमित भर्तियां की जाएं। शिक्षक विहीन कक्षाएं शिक्षा के शरीर में ऑक्सीजन की कमी जैसी हैं।

प्रयोगशालाओं और आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का उन्नयन:केवल चारदीवारी खड़ी करना पर्याप्त नहीं है। प्राथमिक स्तर पर विज्ञान किट और कंप्यूटर से लेकर उच्च शिक्षा व मेडिकल कॉलेजों में नवीनतम पेटेंट, उपकरण और आधुनिक डिजिटल टूल्स अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

बुनियादी नागरिक सुविधाएं: प्रत्येक स्कूल और कॉलेज में सुरक्षित पक्की इमारत, छात्र-छात्राओं के लिए अलग एवं स्वच्छ शौचालय, पीने का शुद्ध पानी और पर्याप्त फर्नीचर की उपलब्धता सुनिश्चित हो।

सख्त जवाबदेही और ऑडिट: बुनियादी ढांचे और उपकरणों के नाम पर जारी होने वाले सरकारी फंड का स्वतंत्र सामाजिक और शैक्षिणक ऑडिट होना चाहिए, ताकि कागजों पर चलने वाली प्रयोगशालाएं वास्तव में विद्यार्थियों के काम आ सकें।

जब शिक्षा स्वस्थ होगी, तभी जीवन का वास्तविक धन मिलेगा

कहा जाता है कि विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम्-अर्थात सभी धनों में विद्या रूपी धन ही सर्वश्रेष्ठ है। किंतु यह धन समाज को तभी समृद्ध कर सकता है जब विद्या प्रदान करने वाली व्यवस्था स्वयं स्वस्थ, सक्षम और स्वायत्त हो। जर्जर दीवारों, खाली कुर्सियों, शिक्षक विहीन कक्षाओं और उपकरण विहीन प्रयोगशालाओं के सहारे हम इक्कीसवीं सदी की ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में विश्वगुरु बनने का सपना नहीं देख सकते। शिक्षा का स्वास्थ्य ठीक करना अब कोई नीतिगत विकल्प नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अस्तित्व और स्वाभिमान का अनिवार्य तकाजा है। जिस दिन हमारी पाठशालाएं स्वच्छ, सुसज्जित और समर्पित शिक्षकों से परिपूर्ण होंगी, और हमारे विश्वविद्यालय व मेडिकल कॉलेज विश्वस्तरीय शोध व उपकरणों से लैस होंगे, उसी दिन देश के वास्तविक जीवन-धन की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

–प्रोफेसर अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति, कानपुर एवं
गोरखपुर विश्वविद्यालय

बुजुर्गों की बातें : परंपराओं में छिपी अनुभव की लंबी सोच



डॉ. अर्चना गोदारा

परंपराएं केवल निभाने के लिए नहीं, समझने के लिए भी होती हैं। बुजुर्गों ने जीवन के अनुभवों को नियमों में ढाला था, लेकिन हमने उन नियमों को तो याद रखा, उनके पीछे छिपे कारणों को भुला दिया।

हमारे घरों में कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें हम बचपन से सुनते आए हैं। सावन में सांप को मत मारना, श्राद्ध पक्ष में कौए को भोजन देना, रात में झाड़ू नहीं लगाना, कुछ विशेष दिनों में सिर नहीं धोना और दिवाली से पहले पूरे घर की सफाई करना। समय के साथ इनमें से कई बातें लोगों के लिए केवल रीति-रिवाज बनकर रह गई हैं। नई पीढ़ी इन्हें पुरानी सोच कहकर खारिज कर देती है, जबकि पुरानी पीढ़ी भी कई बार इनके पीछे का कारण बताए बिना इनके पालन पर जोर देती है।

सवाल यह नहीं है कि परंपरा सही है या आधुनिकता, सवाल यह है कि आखिर ये बातें हमारे जीवन का हिस्सा कैसे बनीं? क्या इनके पीछे कोई व्यावहारिक अनुभव, प्रकृति का अवलोकन या सामाजिक जरूरत रही होगी? हमारे बुजुर्गों के पास आज जैसी वैज्ञानिक शब्दावली और तकनीकी सुविधाएं भले नहीं थीं, लेकिन उनके पास प्रकृति और जीवन को करीब से देखने का अनुभव था। वे मौसम, खेती, पशु-पक्षियों और घरेलू परिस्थितियों को समझते थे। उन्होंने अपने अनुभवों से जो सीखा, उसे ऐसी मान्यताओं और नियमों का रूप दिया, जिन्हें अगली पीढ़ी आसानी से याद रख सके।

सावन में सांप को न मारने की परंपरा को ही लें। बरसात में जमीन के भीतर पानी भरने से सांप अपने बिलों से बाहर निकलते हैं और सुरक्षित जगह की तलाश में खेतों तथा घरों के आसपास पहुंच जाते हैं। ऐसे में भयभीत होकर उन्हें मार देना स्वाभाविक प्रतिक्रिया हो सकती है, लेकिन प्रकृति में उनकी भूमिका को समझना भी जरूरी है।

सांप चूहों की संख्या नियंत्रित करने में मदद करते हैं। चूहे खेतों की खड़ी फसल, घरों में रखे अनाज और अन्य खाद्य सामग्री को नुकसान पहुंचाते हैं। यानी जिस जीव को देखकर हम डरते हैं, वही खेती और खाद्य सुरक्षा के प्राकृतिक संतुलन में अपनी भूमिका निभाता है। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं कि जहरीले सांपों के मामले में सावधानी न बरती जाए, बल्कि यह समझना है कि हर जीव को बिना कारण मार देना उचित नहीं। इसी तरह श्राद्ध पक्ष में कौओं को भोजन कराने की परंपरा को भी एक व्यापक दृष्टि से देखा जा सकता है।

कौए बचे हुए जैविक पदार्थों और भोजन को खाकर प्राकृतिक सफाई में योगदान देते हैं। पुराने समय में कचरा प्रबंधन की आधुनिक व्यवस्था नहीं थी। घरों और बस्तियों के आसपास पक्षियों की यह भूमिका उपयोगी थी। कौए को भोजन देने की परंपरा मनुष्य को दूसरे जीवों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास भी कराती थी। आज हम जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण की बात करते हैं, जबकि हमारे सामाजिक व्यवहार में प्रकृति के साथ साझा जीवन की यह भावना पहले से मौजूद रही है।

रात में झाड़ू न लगाने की बात भी केवल धार्मिक मान्यता के रूप में नहीं देखी जानी चाहिए। बिजली और पर्याप्त रोशनी के अभाव में पुराने घरों में रात के समय सफाई करना आसान नहीं था। मिट्टी के दीपक या लालटेन की सीमित रोशनी में झाड़ू लगाते हुए अनाज के दाने, सिक्के, छोटी कीमती वस्तुएं या सोना के बने छोटे गहने कूड़े के साथ बाहर जाने की आशंका रहती थी। ऐसे में परिवार के बड़े लोगों ने रात में झाड़ू लगाने से मना किया होगा। बाद में इस सावधानी को लक्ष्मी के घर से चले जाने जैसी मान्यता से जोड़ दिया गया, जिससे बात लंबे समय तक लोगों की स्मृति में बनी रही।

इसी संदर्भ में दिवाली की सफाई को समझना भी दिलचस्प है। बरसात के बाद घरों में सीलन, धूल, जाले और कीड़े-मकौड़े बढ़ जाते थे। अनाज रखने के स्थान, रसोई, भंडार और घर के बंद कोनों की सफाई जरूरी हो जाती थी। दिवाली से पहले पूरे घर की सफाई का अवसर इस आवश्यकता को एक सामूहिक गतिविधि में बदल देता था।

घर का अनुपयोगी सामान हटाया जाता, दीवारों और कोनों की सफाई होती तथा खिड़की-दरवाजे खोलकर धूप और हवा को भीतर आने दिया जाता। आज इसे हम घर की वार्षिक गहरी सफाई कह सकते हैं। उस समय त्योहार के साथ इसे जोड़ने का एक व्यावहारिक लाभ यह भी था कि परिवार के सभी सदस्य मिलकर इस काम में भाग लेते थे। इस तरह एक सांस्कृतिक आयोजन घर की स्वच्छता और स्वास्थ्य से भी जुड़ जाता था।

कुछ विशेष दिनों में सिर न धोने की परंपरा भी अलग-अलग क्षेत्रों और परिवारों में देखने को मिलती है। इसका कोई एक निश्चित वैज्ञानिक कारण बताना उचित नहीं होगा, लेकिन पुराने समय की घरेलू परिस्थितियों पर नजर डालें तो कई व्यावहारिक पहलू सामने आते हैं। पानी दूर से भरकर लाना, उसे गर्म करना और लंबे बालों को धोकर सुखाना समय और श्रम का काम था। सर्दी और बरसात में गीले बालों के साथ घरेलू काम करना असुविधाजनक भी हो सकता था।

संभव है कि कुछ परिवारों में निश्चित दिनों को इस काम से विश्राम देने की परंपरा विकसित हुई हो। इसी तरह मौसम के अनुसार खान-पान बदलने की पुरानी आदतों में भी अनुभव की भूमिका दिखाई देती है। गर्मियों में हल्का भोजन, पानी और तरल पदार्थों पर ध्यान, सर्दियों में ऊर्जा देने वाले खाद्य पदार्थों का सेवन और बरसात में भोजन तथा पानी की स्वच्छता को लेकर सावधानी, ये सभी बातें जीवन की परिस्थितियों से जुड़ी थीं। भोजन से पहले हाथ धोना भी ऐसी ही आदत है, जिसे आज स्वास्थ्य विज्ञान स्वच्छता के महत्वपूर्ण नियम के रूप में स्वीकार करता है। पुराने समय में इसे घर के संस्कार और अनुशासन का हिस्सा बनाया गया था। इससे स्पष्ट होता है कि हर व्यवहार के पीछे कोई बड़ा सिद्धांत ही हो, यह जरूरी नहीं; कई बार छोटी-छोटी सावधानियां ही स्वस्थ जीवन का आधार बनती हैं।

हालांकि हर पुरानी परंपरा को वैज्ञानिक साबित करने की कोशिश करना भी उचित नहीं है। कुछ मान्यताएं सामाजिक परिस्थितियों से बनीं, कुछ धार्मिक विश्वासों से जुड़ीं और कुछ समय के साथ अपना मूल अर्थ खो बैठीं। कई परंपराओं में ऐसे पक्ष भी हैं, जिन्हें आज बदलने की जरूरत है। इसलिए किसी बात को केवल इसलिए सही नहीं माना जा सकता कि वह पीढ़ियों से चली आ रही है। उसी तरह केवल पुरानी होने के कारण उसे अंधविश्वास घोषित कर देना भी समझदारी नहीं है। विज्ञान का वास्तविक स्वभाव प्रश्न करना, कारण तलाशना और प्रमाण के आधार पर निष्कर्ष निकालना है। यदि किसी परंपरा के पीछे उपयोगी तर्क है, तो उसे समझकर आज के संदर्भ में अपनाया जा सकता है। यदि उसका आधार केवल भय या भ्रम है, तो उस पर पुनर्विचार करना चाहिए। परंपराओं को समझने का यही संतुलित तरीका है।

आज की विडंबना यह है कि हम कई बार परंपराओं का पालन तो करते हैं, लेकिन उनका अर्थ नहीं जानते। दूसरी ओर, आधुनिकता के नाम पर कुछ लोग हर पुरानी बात को बिना समझे अस्वीकार कर देते हैं। दोनों ही स्थितियों में विचार करने की प्रक्रिया पीछे छूट जाती है। हमारे बुजुर्गों ने अपने आसपास की दुनिया को देखकर, गलतियों से सीखकर और जीवन की जरूरतों को समझकर अनेक व्यवहार विकसित किए थे। उनके पास हर बात का लिखित प्रमाण नहीं था, लेकिन अनुभव की एक लंबी विरासत जरूर थी।

जरूरत उस विरासत को आंख बंद करके अपनाने की नहीं, बल्कि उसकी परतों को खोलकर समझने की है। किसी परंपरा का महत्व केवल उसके पुराने होने में नहीं, बल्कि उस उपयोगिता और विचार में है जो उसे जन्म देने के पीछे रहा होगा। हमें लकीर पीटने वाली पीढ़ी नहीं, बल्कि लकीर के पीछे का कारण समझने वाली पीढ़ी बनना होगा। क्योंकि कई बार बुजुर्गों की एक साधारण-सी बात में जीवन, प्रकृति और समाज को समझने की ऐसी गहरी दृष्टि छिपी होती है, जिसे पहचानने में हम आज भी पीछे हैं।

–डॉ. अर्चना गोदारा,
सहायक आचार्य, लेखक,
समाजशास्त्री

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 5 नवम्बर, 2026

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत-2083, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 3:56 तक, वैधृति योग शुक्रवार प्रात: 5:10 तक, बालव करण दिन 10:36 तक, चन्द्रमा आज 9:35 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी व्रत और पूजा, वैधृति पुण्यं है। आज शुक्र वक्री कन्या में रात्रि 1:16 से प्रवेश करेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ सूर्योदय से 8:05 तक, चर 10:48 से 12:10 तक, लाभ-अमृत 12:10 से 2:54 तक, शुभ 4:13 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 1:30 से 3:00 तक, सूर्योदय 6:43, सूर्यास्त 5:38



मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आज अटका हुआ धन प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।



मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।



कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।



सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।



कन्या
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा, महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



तुला
व्यावसायिक एवं घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।



वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।



मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्ध